ISSN:2583-8849



पूजा अग्रवाल
हनुमानगढ़, राजस्थान

बचपन लौटा दे

मुझे जिंदगी के पास फ़िर से बैठा दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे

जहां बेजान चीजों में भी कुछ जान थी
मेरी भी अपनी एक पहचान थी
मेरी वो पहचान मुझको दिला दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे

रफ्तार में जिंदगी की खो गई हूँ
हर अहसास से दूर हो गई हूँ
मेरे सोए अरमान फिर से जगा दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे

मै झूलों से गिर कर सम्भलना चाहती हूँ
पकड़ फिर उंगली चलना चाहती हूँ
चाँद -तारों को मेरा झूला बना दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे

फूलों - कलियों की वो शामें घनेरी
ख्वाबों खिलौनों की दुनिया वो मेरी
परियों के फिर से किस्से सुना दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे

भीगी बरसात में तैरती कश्तियाँ
तितलियों के पीछे दौड़ती मस्तियाँ
जिन्दगी का हर फिक्रो-गम भूला दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे

पंछियों की चहकती प्यारी बोलियाँ
हिरनों सी वो मासूम टोलियाँ
सपने सारे मेरी पलकों पे सजा दे
काश कोई मेरा बचपन लौटा दे